Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 5 ~ Issue 7 (2017) pp: 112-120
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

दोहाकार सन्नू मेवाती की मेवात दृष्टि

डॉ.देशराज वर्मा
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राज.

शोध–पत्र सारांष

'मेवात' अंचल भौगोलिक–राजनीतिक इकाई न होकरसांस्कृतिक वैभव का पर्याय रहा है। राजस्थान हरियाणा तथा उ.प्र. का एक भौगोलिकक्षेत्र जिसमें राजस्थान के अलवर भरतपुर, हरियाणा के नूह मेवात उ. प्र. के कोशीछाता मथुरा आदि समाहित हैं, को मेवात कहा जाता है। मेव, मेवास, मेवल जैसे सरोकारों ने इसे मेवात बनाया है। मेव जाति के बाहुल्य के कारण यह अंचल मेवात कहलाता है। मेवात धार्मिक से अधिक सामाजिक–सांस्कृतिक समरसता के कारण विशिष्ट है। यहाँ के रहन सहन, खानपान, खेती बाड़ी, तीज त्योहार, हल, बैल, बात, दूहा, गीत, रतवाई आदि में किसी प्रकार की विभिन्नतानहीं है। मेवात के सभी लोग बिना धार्मिक कट्टरता के अपने–अपने विष्वास एवं आस्था का पालन करते हुए भाईचारे की मिसाल पेश करते हैं। 'मेव' कौम के लोग भी होली दीवाली पर हिन्दुओं की तरह अपने घरों की लिपाई–पुताई, बैलों का श्रृंगार आदि रूचिपूर्वक करते हैं।

मेवाती लोककाव्य तथा दोहों की एक समृद्ध परम्परा रही है। सन्त लालदास, सादल्ला नवी खाँ, राजू खाँकी परम्परा में ही आधुनिक दोहाकार सन्नू मेवाती का नाम आता है। सन्नू मेवाती मेवात का एक जाना–पहचाना नाम है। दोहा–लेखन उनका सशक्त औजार है। उन्होंने मेवात अंचल से विशेष लगाव होने के कारण अपने नाम में 'मेवाती' उपनाम जोड़ा है। मेवात की सांस्कृतिक–सामाजिक परिस्थितियों के भीतर सामाजिक सौहार्द, पंथ–निरपेक्षता, मनुष्यता तथा जन भाषा मेवाती की पक्षधरता उनकी दृष्टि का इन्द्रधनुष हैं। इस शोधालेख में जनकवि के इन्हीं सरोकारों की पड़ताल दर्ज है।

उद्देश्य–'मेवात' अंचल के सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवहार सदैव काम्य रहे हैं। 'मेव' जाति की बहुलता के बावजूद यहाँ धार्मिक–सामाजिक समरसता और सहिष्णुता में कमी नहीं आई है। बहुसंख्य मेव हिन्दुओं के रीति–रिवाजों का उपयोगिता की वजह से जाने–अनजाने सहर्ष पालन करते रहे हैं। यहाँ की मीरासी जाति काव्यात्मक प्रतिभा सम्पन्न संगीत–संवाहक पेषेवर बिरादरी है। यहाँ की लोक छवि, मेवात के लीजेण्ड्स, मेले, तीज पर्व,मुकम्मल सीमांकन की ललक, लोक साहित्य, सभी में निरपेक्ष भाव से मानवता को केन्द्र में रखा गया है। सन्नू मेवाती इन्हीं सरोकारों की वजह से मेवात का पर्याय बन गया है।

परिकल्पना– 'मेव', 'मेवात' और मेवातीशब्दसांस्कृतिक दृष्टि से समझने–समझाने का बड़ा स्पेश चाहते हैं। इन्हें 'धार्मिक' सन्दर्भों में तो बिल्कुल नहीं समझना चाहिए। बेशक आज 'मेवात' का नाम कुछ तकनीकी प्रेरित अषोभनीय व्यवहारों से जुड़ने के कारण चर्चा का विषय बनने लगा है। सच में यह 'मेवात' का आईना नहीं हो सकता। मेवात की मेव कौम अपने ईमान, परिश्रम, खुद्दारी तथा इन्सानियत के कारण 'मेव' कहलाती है। मेवात को जातीय–सरोकारों से ऊपर लोक सन्दर्भों में देखना चाहिये। अंग्रेजी पढ़े आधुनिक ख्यालातों के धनी दोहाकार सन्नू मेवाती ने कोट–पेंट टाई के साथ आजीवन साफा बाँधकर मेवातीपन को सिर पर रखा। अपनी लेखनी और दृष्टि में 'इन्सान' को सभी धर्म, पंथ, मजहब से ऊँचा रखा तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रचार–प्रसार किया। यह दृष्टि ही मेवात को सही परिभाषित कर सकती हैं।

स्रोत सन्दर्भ

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का सहारा लेकर विषय को परिपुष्ट करने का प्रयास किया गया है। विषय के संदर्भ में मूल पुस्तकों के साथ–साथ आधिकारिक विद्वानों के विचार, व्यक्तिगत पर्यवेक्षण, डायरी, समाचार–पत्रों तथा वेब माध्यमों का भी यथायोग्य साभार उपयोग किया है। इस अध्ययन की प्रकृति साहित्यिक अध्ययन पर आधारित है।

दोहाकार सन्नू मेवाती की मेवात दृष्टि

जब हम 'मेवात' शब्द का उच्चारण करते हैं तब हमारे मनस् पर भौगोलिक, राजनीतिक नाप–जोख का अक्स न होकर सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यबोध का बिम्बात्मक उद्घोष मुखर होता है। मेवात किसी राजनीतिक क्षेत्र या भौगोलिक सीमांकन का ही पर्याय नहीं है वरन् यह इनकी रेखाओं के भीतर समाया रंग और रस का इन्द्रधनुषी आख्यान जान पड़ता

है। यह नामकरण अंचल के समाजशास्त्र की काव्यात्मक रसानुभूति का जीवित ही नहीं वरन् जीवंत लेखा है। 'मेवात'शब्द से महसूस होता अर्थबोध सर्वप्रथम यहाँ की जुबान–मेवाती बोली को झंकृत करता है जोकि बहुसँख्यक मेव जाति की ही भाषा न होकर सभी जाति वर्ग के भाषिक विन्यास (उच्चारण के लहजे के साथ शब्द सम्पदा) की ओर भी संकेत करता है।

मेवात का आँचलिक सौन्दर्य ही इसकी जीवंतता का प्रमाण है। इसकी आँचलिकता का सीमांकन हरियाणा के गुड़गाँव, सोहना, नूँह मेवात के साथ उत्तरप्रदेश के छाता कोसी मथुरा को स्पर्श करता है। राजस्थान के अलवर जिले के किशनगढ़, तिजारा, रामगढ़, लक्ष्मणगढ़, उमरैण तथा भरतपुर जिले के नगर, कामाँ, डीग तहसीलों में इसकी व्याप्ति और गंध को सघनता के साथ देखा जा सकता है।वर्तमान में मेवात प्रदेष दिल्ली के दक्षिणी भाग, हरियाणा के मेवात जिले की नूँह, झिरका फिरोजपुर तथा पुन्हाना तहसील, फरीदाबाद जिले के हथीन तहसील, उत्तरप्रदेष की कोसी तथा छाता तहसील तक, राजस्थान के अलवर जिले की तिजारा, किषनगढ़, अलवर, गोविन्दगढ़, लक्ष्मणगढ़, रामगढ़ तथा भरतपुर जिले की नगर, कामां पहाड़ी तहसील तक विस्तृत है।[1]

लोक में विरोधपूर्ण संघर्ष नहीं होता जबकि शास्त्र या भद्रलोकीय संस्कृति में विरोध, संघर्ष, विद्रोह की स्थितियाँ होने की सम्भावनाएँ अधिक होती हैं। लोक जीवन में आँचलिक छवियाँ अपना महत्व इसी कारण रखती हैं। अँचल की भाषा, जीवन–आस्था, विष्वास, रहन–सहन, वेशभूषा, अंधविष्वास, भूत–प्रेत, गालियाँ, गीत, भूख–प्यास, आशा, आकांक्षा, वाद्ययंत्र, स्वाँग, नाटक, स्त्री, लोककला आदि के सरोकार अपनी विशिष्टता में बिना विरोध के जीवंत बने रहते हैं।

इन विशिष्टताओं की सम्मानपूर्वक रक्षा करने वाला ही समन्वय का सूत्रधार होता है। समन्वय–सामंजस्य का समरस आख्यान् रचने वाला ही लोक नायक या युगनेता बनता है। गोस्वामी तुलसी को तभी तो युगनेता या लोकनायक कहा गया है तथा उनका समूचा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा कहलाया। सत्ता या लोक का कोई विशिष्ट धर्म या सम्प्रदाय भी नहीं होता। धर्म–शास्त्र या सत्ता प्रतिष्ठान के सरोकार लोक को प्रेरित प्रभावित करते अवश्य हैं।

मेवात का चितेरा

लार्ड सन्नू (5 मई 1929–अगस्त 2016) मेवात के बौद्धिक जगत का एक जाना पहचाना नाम है। मेवात अँचल के अलवर जिले की लक्ष्मणगढ़ तहसील के छाँगलकी (बड़ोदा मेव) गाँव में मेव कौम के डेमरोत गोत्र में जन्में कवि का लार्ड नाम भी विशिष्ट जीवन शैली के कारण पड़ा। इनकी माता का नाम घोंघा तथा पिता चौधरी जुम्मा खाँ अलवर रियासत के नामी पहलवान थे। मेवात की मेव कौम में जन्म लेने का गौरव उन्हें रहा परन्तु पहचान एवं स्थापित होने का संघर्ष अपनी जगह रहा। एक साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि वे सेण्ट्रल कॉआपरेटिव में अंग्रेजी के व्याख्याता पद पर सरकारी सेवा में रहे तथा स्वयं किसी राजनीतिक पद पर या जनप्रतिनिधि नहीं रहे। मेवात में शिक्षा (तालीम) की अलख जगाने का मिशन उनके जीवन की अभूतपूर्व उपलब्धि कही जा सकती है। सन्नू अपने पिता को भी उसे शिक्षा दिलाने के कारण विशिष्ट मानता है–

पहले तो कुश्ती लड़ी, पीछे पाला बैल।
फिर छोरो सन्नू पढ़ायो, ज्यानै खेलो क्रिकेट खेल।।

डॉ.जीवन सिंह मानवी के अनुसार– "लार्ड सन्नू ने कभी इस बात से परहेज नहीं किया कि वे मेव समुदाय से हैं। मेव होने के आत्मगौरव को वे जीते रहे और उसी धमक एवं ठसक के साथ निडर भाव से अपना जीवन जिया और एक सच्चे मेव सपूत होने का सबूत दिया। उन्होंने सबसे ज्यादा दोहे लिखे, किन्तु उनके प्रकाषन में ज्यादा रुचि नहीं ली।"[2]

लार्ड सन्नू ने मेवात अंचल से अधिक लगाव होने की वजह से अपने नाम में 'मेवाती' उपनाम जोड़ा। मेव जैसी अनपढ़ जाति में जन्म लेना दोहाकार सन्नू के लिए कई मायनों में अभिशाप रहा। उनका मूल नाम सन्नू खाँ था। शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध कवि ने अलवर के श्री प्रताप राजपूत छात्रावास में सुरेन्द्र सिंह के बदले हुए नाम से अध्ययन किया तथा वहाँ पर अंग्रेजी कवि–आलोचकों का खूब अध्ययन किया। स्नातक स्तर पर राजर्षि कॉलेज से हिन्दी तथा अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया तथा हिन्दी तथा राज. विज्ञान विषयों में एम.ए. किया। मेवाती साहित्य के गीत, रतुवाई, बात, ख्यात, कड़ा, गाली, फाली, ख्याल आदि काव्य रूपों के समानान्तर दूहा या दोहा छंद का भी खासा महत्व रहा है। मेवाती बोली में भी दोहे की प्रसारक क्षमता उतनी ही असरदायक है जितनी हिन्दी में। मुक्तकों में दोहा छंद 'अरथ अमित अति आखर थोरे' की क्षमता के कारण प्रारम्भ से ही लोकप्रिय रहा है। मेवाती लोक साहित्य में दोहा या दूहा छंद की श्रेष्ठता सकारण रही है। सन्नू मेवाती कहता है–

मेवाती साहित्त में, दूहो छंद है मुक्ख।
सुणते गाते बोलते, देवे भारी सुक्ख।।
सन्नू इन दोहान में, भर दियो बहुत विचार।
जो पायो लौटा दियो, राखो नहीं उधार।।

राजस्थानी भाषा और साहित्य में भी 'दूहा' छंद की लोकप्रियता के सन्दर्भ में यह दोहा चर्चित है–

सोरठियो दूहो भलो भली मरवण री बात।
जोबन छायी धण भली, तारा छाई रात।।

सम्भवतः इस दोहे का बिम्ब कवि सन्नू के मानस पटल पर रहा होगा,तभी तो उन्होंने भी मेवाती में यह लिखा है–

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

गाणा में दोहो भलो, और खाण में भात।
भर ज्वानी में धण भली, अर सन्नू पुनूं रात।।

डॉ. जीवन सिंह की प्रतिक्रिया यहाँ द्रष्टव्य है– "हिन्दी जाति के ऐसे अनेक जनपदीय लोक समाजों में मेवाती लोक की अपनी खास और स्वतंत्र पहचान रही है, जो मेवाती बोली के मुहावरे और मेवाती समुदाय के अपने स्वभाव और संस्कारों में व्यक्त होती रही है।"[3]

इन सबके बावजूद कवि सन्नू का देववाणी संस्कृत की ज्ञान–परम्परा तथा व्याकरणिक अनुशासन के प्रति सम्मान का भाव रहा है–

संसकिरत भाषा सदा, है सबसू धनवान।
सन्नू सबसे पुराणी, गुणी जनन की खान।।

इतना ही नहीं हिन्दी और उर्दू की धूप छाँही आभा को साझी संस्कृतिका आधार मानना उनकी उदार सहिष्णुता का परिचायक है–

हिन्दी उरदू एक है, रस मुलखत को भेद।
खींच ताण ओछा करें, ई है सन्नू खेद।।
उरदू जनमी हिन्द में, है फौजन की भाषा।
है सन्नू आसान अर, जन जन में वासा।।

कवि ने आत्म परिचय की शैली में भी दोहे लिखे हैं–

प्यार घणो मेवात सू, नूँ मेवाती नाम।
मैंने फिर यों धर लियो, ई मेवाती नाम।।
मेरो हिन्दुस्तान है, मेरो राजस्थान।
सन्नू जिलो अलोर है, छांगलकी अस्थान।।
मेव कौम ठाडी घणी, डैमरोत बड़गोत।
फिर बी सन्नू लार्ड ने, पाई सजा बहोत।।
पैदा अनपढ़ कौम में, हो सन्नू पछताय।
वा का दिल का दर्द कू, कोई समझै नाय।।

लार्ड सन्नू अपनी विशिष्ट जीवन शैली तथा वेशभूषा के कारण ही लार्ड कहलाया। ठेठ मेवाती होकर भी स्कूली जीवन से क्रिकेट जैसा अंग्रेजीदा खेल खेलना इसका जीवित से अधिक जीवंत उदाहरण है। सिर पर मेवाती अंचल के प्रतीक साफा बाँधना, पेण्ट–शर्ट तथा टाई पहनना, लार्डस खेल मैदान, धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलना तथा परम्परागत मूल्यों से हटकर प्रगतिशील जीवन शैली के कारण वाकई आप लार्ड थे। कृषि एवं पशुपालन संस्कृति मेंपले–बढ़े सन्नू सबसे अलहदा रहे। डॉ. जीवन सिंह मानवी की यह प्रतिक्रिया यहाँ द्रष्टव्य है–"..... यह समुदाय भी अब तेजी से अपनी 'मेवाती' छवि से मुक्त होकर, मेवात के मेव की बजाय एक 'मुसलमान' की तरह दिखना चाहता है.....।"[4]

फैंटा टोपी पागड़ी, सन्नू लई बणाय।
खाणा पीणा भी सभी, न्याला लिया बणाय।।

शरीयत के प्रति उदार तथा मार्क्सवादी चेतना के पक्षधर सन्नू मेवाती सच्चे अर्थो में कॉमरेड थे। वे मेव कौम को आधुनिक शिक्षा देने तथा समयानुसार परिवर्तन के हिमायती थे। लेखन सरोकारों से जुड़ा कवि स्वयं को कृतार्थ मानता है–

सन्नू इन दोहान में भर दियो बहुत विचार।
जो पायो लौटा दियो, राखो नहीं उधार।।

कला एवं साहित्य के प्रति कट्टरता उन्हें स्वीकार्य नहीं थी। आवश्यकतानुसार परिवर्तन होना और करना उनका सिद्धान्त था। वे पन्त की तरह 'तुम वहन कर सको जनमन में मेरे विचार, वाणी तुम्हें क्या चाहिए अलंकार।' के पक्षधर थे। तभी उन्होंने दोहे छंद में परिवर्तन को उपयुक्तमाना–

दोहा में दो सतर हैं, सन्नू कर दिया तीन।
बात न पूरी होय तो, करनी पड़गी तीन।।
चार चरण दो हाथ हैं, ऊ दोहा कहलाय।
पूरी अरथ निकाल कै, ऊ सबकू समझाय।।

मेव कौम और मेवात का वैशिष्टय यहाँ की जबान (भाषा) में देखा जा सकता है। मेवाती का भाषिक विन्यास तथा उसका टोन (लहजा) उसकी जीवंतता का प्रमाण है। मेवात की संस्कृति के संवाहक उपकरणों में यहाँ की भाषा ही सर्वाधिक मुखर हुई है। इस रूप की महत्ता को सन्नू अपने लेखन सरोकारों में जीता है तथा वाणी देता है। तभी तो वह जयघोष की मुद्रा में कहता है–

घरै बैठ लिखतो रहै, ना कहि आय न जाय।
मेवाती साहित्य में, सन्नू रहो समाय।।
सन्नू को सैंको छपो, चुण चुण गूँथो हार।
भर दियो ज्ञान समेट के, बाँचे सब संसार।।
इतनी गहरो उतर कर, मैंने लिखो कलाम।
पाठक तू मत भूलियो, सन्नू करे सलाम।।

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

अंग्रेजी के व्याख्याता रहे तथा हिन्दी में स्नातकोत्तर लार्ड सन्नू का ठेठ मेवाती में लिखना अनूठा सन्दर्भ है। वह कंगूरों से अधिक बुनियाद के पत्थर के सौन्दर्य का हिमायती है। मातृभाषा का देशी एवं सहज रूपांकन तथा चुनाव उनका अपना है जो मेवात प्रेम तथा उसके प्रति समर्पण भाव की पराकाष्ठा का उत्कृष्ट नमूना है। अँचल का सौन्दर्य ही उन्हें आत्मा (रूह) का सौन्दर्य लगता है–

मेवाती भाषा चुणी, कहणा कू हर बात।
या ही में जाहर करा, सन्नू सब जज्बात।।

मेवात का गार्ड

मेव संस्कृति और मेवात लार्ड सन्नू के दोहों का केन्द्र कहा जा सकता है। इस मेवात को जीवित और जीवंत बनाये रखना उनका अभीष्ट रहा है। तभी तो वे बार–बार स्वयं को मेवात का गार्ड, पहरेदार, चौकीदार कहते हैं। मेवात को साकार करना उनका लक्ष्य है। उन्होंने मेव और मेवात को अपने दोहों के माध्यम से परिभाषित करने का भरसक प्रयास किया है। यथा–

मेव कौम को गार्ड है, सन्नू लार्ड हमेश।
कल्चर अर इतिहास को, याकू फिकर विशेष।।
जन सेवा मेवात की, सन्नू मन ली धार।
जाकर ने आकर कही, मैं हरदम तैयार।।

लार्ड सन्नू मेव, मेवात तथा यहाँ की संस्कृति को अपने जीवन और लेखन में जीता है, उसके रंग और रस को भोगता है तथा उसके इन्द्रधनुषी सौन्दर्य पर अभिभूत है–

तरह तरह का फूल चुण, माला लई बणाय।
सन्नू ने साहित्य सू, खुशबू दी फैलाय।।
सन्नू है मेवात अर, मेव कौम की शान।
नू सारी मेवात में, है या को सम्मान।।

मेवात की व्युत्पत्तिपरक उद्भावना व्यक्त करना लार्ड सन्नू का मिशन है। मेव कौम के नृतत्व शास्त्र को उन्होंने अपने दोहों में बड़ी शिद्दत के साथ व्यक्त किया है। इतिहासविदों तथा सुधीजनों के 'मेद''मेवल''मेर' आदि शब्दों को आधार मानकर कवि कहता है–

राजा दाहिर सिंध हो, गाहड़–बाहड हीन।
मेव मेद है एक सा, सन्नू करै अरवीन।।
आर्य चला ईरान सू, बसा सिंध मेवाड़।
फिर मेवल मेवास अर, अंत सन्नू मेवात।।

मेवात अंचल की मुकम्मल सीमा को बताना तथा इसकी महिमा– गायन करना कवि का उद्देश्य रहा है। मेवात की कला, संस्कृति, वीरनायक, भक्त समाज तथा समसामयिक सरोकारों के साथ –साथ वह मेवात के भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं प्रादेशिक सीमांकन की छटपटाहट को अपने दोहों में इस तरह व्यक्त करता है–

दिल्ली सू गुड़गाँव चल, सन्नू सोना आव।
अब सीमा मेवात की, रहो तुम्हें बताव।।
दिल्ली मथुरा आगरा, बयानो र बैराठ।
पिच्छम अलवर रिवाड़ी, बीच मुलक मेवात।।
अलवर सू दिल्ली तलक, है सन्नू मेवात।
फिर अलवर सू डीग तक, कामाँ कोसी जात।।
हरियाणो अर बिरज भूम, काठेड़ र ढूंढाड़।
नैड़ो बागड़ राठ को, बीच सन्नू मेवात।।

'भारत में मेव' आलेख में सिद्दीक अहमद मेव ने बताया है कि एक समय था जब मेवात की सीमाएँ महरौली से लेकर अजमेर तक तथा आगरा से लेकर नारनौल तक फैली हुई थी। लेकिन आज का मेवात सिर्फ हरियाणा के जिला गुडगाँव, राजस्थान के जिला अलवर व भरतपुर, उत्तरप्रदेष के जिला मथुरा की कोसी व छाता तहसीलों तक सिमट कर रह गया है।[5]

कवि सन्नू मेवात अंचल के प्रमुख सीमा स्थलों, शहर, घाटी, चौराहों तथा प्रादेशिक विशिष्टताओं को वाणी देकर मेवात का भौगोलिक सीमा ज्ञान करवाना चाहता है। अलवर से दिल्ली, मथुरा, डीग, कामाँ, राठ तथा नेहड ढूँढाड़ तक फैला मेवात अँचल अपनी भाषा, लोक काव्य, संस्कृति, सामाजिकसमरसता तथा विशिष्ट मानवीय मूल्यों की इन्द्रधनुषी आभा से जगमग होता रहा है। यथा–

बिना मात्रा को शहर, है अलवर मशहूर।
कहै पहाड़ सू छटंकी, सन्नू थोड़ी दूर।।
सोना सू चल तावडू, फिर भिवाड़ी मोड़।
फिर टपूकड़ो तिजारो, और किशनगढ़ ठोड़।।
अलवर पलवल भिवाड़ी, तसी कठूमर ओड़।।
सन्नू बीच मेवात है, बीच बड़कली मोड़।।
आगे चल फिर खैरथल, जींदोली घाटी।

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

फिर घुस जा अलोर में, चौरासी वाटी।।
मोड़ उटावड़ भिवाड़ी, सन्नू अपणी ठोड़।
जालूकी अर बड़कली, ये मेवाती मोड़।।

मेवात के शहर कस्बों के नाम भी संस्कृति नायकों तथा इतिहासपुराणों के महापुरुषों के अनुरूप हैं–

रामकिशन लक्ष्मण भरत गोविंद अर गोपाल।
सारा गढ़ मेवात में, लोग बहुत खुशहाल।।

मेवात के ऐतिहासिक सरोकारों को भी कवि सन्नू ने वाणी दी है–

उमरैण सू आगे है, नटणी को बारो।
सन्नू अकबर बीच में, पाणी कू बँटवारो।।
सन्नू अलवर भरतपुर, दो रियासत मेवात।
कदे मदे ठनती रही, घणो निभो पर साथ।।
कैसरोली अर जावली, दो ठाड़ी जागीर।
अलवर का दरबार में, सन्नू इनको सीर।।
या कोलाणी गाँव में, झगड़ो रहो हमेश।
राजन सू लड़तो रहो, नाय खाण दी पेश।।

मेवात के लीजेण्ड्स

मेवात अंचल का इतिहास यहाँ के वीर नायकों संतों भक्तों, कथा गायकों के वीरतामूलक कार्यों की दृष्टि से प्रेरक एवं समृद्ध रहा है। इन मेवाती नायकों के स्मरण मात्र से मेवात का गौरव झंकृत हो उठता है। मेवात की इनविभूतियों में इतिहास पुरुष हसन खाँ मेवाती, सामाजिक समरसता के प्रतीक संत लालदास, महाभारत की कथा को लोकशैली में व्यक्त करने वाले शायर सादल्ला खाँ (पण्डून को कड़ा), भीकजी, अली बख्स (स्वांग ख्याल), नत्थू खाँ, एवज खाँ जैसे लीजेण्डस के नाम ही पर्याप्त हैं। दोहाकार लार्ड सन्नू मेवाती ने भी इन महान् विभूतियों को अपने दोहों में गर्व के साथ रेखांकित किया है–

लालदास अर हसन खाँ, सादल्ला आसीन।
चार खम्भ मेवात का, सन्नू करे अरवीन।।
साँगा संग हसन खाँ, मेवाती जुज्झार।
सन्नू बाबर सू भिड़ो, जंग खानवा जार।।
सादल्लो खक्के सुणा, ऐवज नत्थू भीख।
लालदास सबको गुरू, दी दुनिया कू सीख।।
लालदास अर भीकजी, सादल्ला खक्के।
सन्नू ये मेवात के हैं शायर पक्के।।
सन्नू बाहड़ कोट में, छिरकलौत की पाल।
लायो दादी बिसरणी, अकबर सू तत्काल।।
मेव खान अर घुरचढ़ी, हा सन्नू बलवान।
बाघोड़ा की पाल में मिरजापर स्थान।।

कविसन्नू स्वयं को इन लीजेण्डस की परम्परा का वाहक, मेव कौम का गार्ड तथा मेवात का चितेरा मानता है–

लालदास अर हसन खाँ, पीछे सादल्ला।
फिर या सन्नू लार्ड कू, जन्म दियो अल्ला।।
एक संत एक शाह अर, इक शायर एक लार्ड।
मेव कौम के सदा ये, रहा सुरक्षा गार्ड।।
ज्ञानी ध्यानी सूरमा, बोहत हुआ मेवात।
सन्नू तेरी सबन सू, न्याली अपनी बात।।

मेवात के आधुनिक हस्ताक्षरों की भी लम्बी परम्परा रही है। मेवात अंचल के आधुनिक सरोकारों को वाणी देने वालों में प्रो. जुगमंदिर तायल (पूर्व प्राचार्य तथा संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर) अनिल जोशीमेवाती का दोहा–संसार (सं.पण्डून को कड़ा, मेवाती लोकगीत) डॉ. जीवन सिंह मानवी (कवि, आलोचक तथा पूर्व प्राचार्य कॉलेज शिक्षा) मा. हरिनारायण सैनी, स्वतंत्रता सेनानी फूलचंद गोठडिया, इतिहास मर्मज्ञ एडवोकेट हरिशंकर गोयल, डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा (पूर्व प्राचार्य, कॉलेज शिक्षा) डॉ. छंगाराम मीना (पूर्व प्राचार्य कॉलेज शिक्षा), लाई सन्नू, पदम श्री सूर्यदेव सिंह बारेठ, कॉमरेड नुंशी खां बालौत, डॉ. फूलसिंह सहारिया (मेवात पर शोधकार्य कॉलेज शिक्षा सेवा) आदि के नाम आज मेवात के बौद्धिक जगत् के पर्याय हैं। लार्ड सन्नू ने अपने दोहों के केन्द्र में इन पुरोधाओं को ससम्मान रखा है। लेखन सरोकारों से जुड़ा कवि स्वयं को कृतार्थ मानता है–

तायल जोशी मानवी, सैनी गोठड़िया।
सन्नू अर मुंशी रहा, सबका जोड़निया।।

दोहे छंद के लघु कलेवर के कारण कवि कुछ नामों का उल्लेख नहीं कर सका ळें

मेवात की लोक छवि

लोक रस की सतरंगी छटा भारतीय परम्परा की विलक्षणता रही है। लोकायन की बात, ख्यात, कथा, गीत आदि से लोकानुरंजन ही नहीं होता बरन् इनसे नैतिक शिक्षा तथा मर्यादा के प्रतिमान रचे जाते हैं। मेवात की लोक छवि भी इसका अपवाद नहीं है।**डॉ. देशराज वर्मा ने लिखा है–** "मेवात अंचल भौगोलिक विशिष्टताओं से अधिक सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध रहा है। मेव जाति के बाहुल्य तथा 'मेर''मेवल' जैसे सरोकारों केकारणमेवात का अपना एक अलग व्यक्तित्व है जो बोलता ही नहीं वरन् दिखाई–सुनाई भी देता है। मेवात की भाषा, मुहावरे, शब्द–भण्डार तथा टोन (लहजा) का एक जीवन्त अन्दाज है जो उसे औरों से पृथक दर्शाता है।"[6]

सन्नू मेवाती के दोहों में मेवाती लोक साहित्य की गहरी पैठ के दर्शन होते हैं। यथा–

होली फाली विरहड़ा, सन्नू बोहत सी बात।
रतवाई तारीक अर, बारहमासी ख्यात।।
रतवाई दोहा सदा, गायें शौक सू मेव।
भाड़ा पै गावें नही, सन्नू मेव की टेव।।
मावस होली दिवाली, और दशहरो साथ।
मेवन के मनता रहा, सन्नू सबके साथ।।
और काम होता रहा, कुआ चाक अर भात।
गाली होली गीत सब, सन्नू सदा ही साथ।।
होली ढप पै गाय हा, बाल भून के खूब।
होला करके चणा का, सन्नू बँटता खूब।।
ठाल बैल कू देय हा, मावस के दिन लोग।
गुडधाणी ख्वा बैल कू, सन्नू देता भोग।।

अकाल और दुर्भिक्ष की मार को मेवात ने झेला है। अकाल ने यहाँ का भूगोल ही नहीं वरन समाज एवं संस्कृति के सन्दर्भों को भी बदल दिया।यथा–

छप्पन्या को काल हो, सन्नू भारी काल।
मेव पहँचगा मालवे, कुछ होगा बेहाल।।

मेवात के पशुपालन व्यवसाय में गोपालन का विशेष महत्व रहा है।गाय भारतीय संस्कृति का पर्याय मेवात में भी रही। सारे पर्व–उत्सव गोधन से जुड़े रहे हैं।डॉ. ब्रज किषोर शर्मा मेवों को मीणा जनजाति के परिवार के सदस्य के रूप में मानते हुए कहते हैं– "एक समय यह क्षेत्र (मेवात) मीनावाटी के नाम से जाना जाता था जो बाद में मेवात हो गया। मेवों व मीणों के गोत्रों में भी समानता पायी जाती है।"[7]लार्ड सन्नू लिखते हैं–

सन्नू देखी दीवाली, पै सिंगरे ही गाय।
गोबरधन कू बणा के, पूजै सब ही वाय।।
गाय दान में देय हा, सन्नू सारा मेव।
अब मेवन के संग ही, सभी भूलगा टेव।।
धीरे–धीरे खत्म अब, हो रो है गोबंस।
सन्नू स्यारस टिटहरी, हिरण मिले न हंस।।

मेवात की धरा धन–धान्य वनस्पति से समृद्ध रही है। इसकी उर्वर भूमि में सभी प्रकार के अन्न खाद्यान्न उपजते रहे हैं। पशुपालन तथा कृषि के सरोकार यहाँ के छाछ राबड़ी (महर्री) के भोजन के रूप व्यक्त हुए हैं। महर्री का खाना मेवात के गौरव तथा सम्मान की निशानी है। कवि लिखता है–

निपजै सातू तूड ही, धन धरती मेवात।
कुदरत ने सब कुछ दियो, सन्नू कमी न बात।।
मेव मेहर मेवात में, छाछ मेहरी खाँय।
सन्नू मालक मेहेडी, राजी होर पकाँय।।
कोले माँढ़े सातियो, अर सुभ मंगल गाँय।
सिर पै फैंटो बाँध के, सन्नू मेहर कहलाँय।।

मेवाती लोक साहित्य पण्यक्रीत या सामन्ती आदेशों से नहीं रचा गया वरन् यहाँ के जीवन के आशा–आकांक्षा, आँसू–मुस्कान, हृदय सरोवर की लोल लहरों सहित अंधविष्वास, संकल्प, आस्था, मुहावरे, गाली आदि की सहज अभिव्यक्तियाँ हैं।

मेव कौम का गौरव

'मेव' जाति की बहुलता मेवात की विशिष्टता है। मेवात के लोग जन्मभूमि पर मर मिटने वाले पराक्रमी योद्धा रहे हैं। दानशीलता, वीरता, मातृभूमि प्रेम आदि के गुण यहाँ के रग–रेशे में बसे हुए हैं। सामाजिक दृष्टि से मेव लोग हिन्दुओं की तरह गोत्र का ध्यान रखते हैं। मेवनी नाक नहीं बिंधवाती हैं। जो कोई अपने नाते को भूलकर, जन्मस्थान को भूलकर अन्यत्र जा बसे वो फिर सच्चा मेव नहीं रहता है। मेव सिर पर अँगोछे का साफा बाँधता है तथा जरूरत पड़ने पर शत्रु से लॉग चढ़ा जा भिड़ता है या फिर स्वाँग–नाटक में जाकर रुचि से रम जाता है। लार्ड सन्नू ने लिखा है–

दाता शायर सूरमा, जन्मे हैं मेवात।
मायड भूम पै कट मरै, सन्नू मेव की जात।।

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

शादी करें न गोत में, नाक नहीं बिंधवाय।
सन्नू मेव पिछाण ये, चली सदा सूं आय।।
गोती सो भाई रहे, बाकी सब असनाई।
सन्नू रीत ई मेव की, सदा सू चल आई।।
गोत नात कू भूल के, चलौ और जिग जाय।
ऊन मेव सो लगे फिर, सन्नू फिर दोहराय।।
मेव बाँध ले मुढ़ासौ, जाट चढ़ा ले लाँग।
दोनू सन्नू जा धँसे, लट्ठ या फिर साँग।।
मेवन पै ना राज हो, ना सन्नू जागीर।
फिर भी ये दातार हा, घर घर मिले नजीर।।

मेवात के लोग स्वाभिमानी, त्यागी, दाता तथा परिश्रमी रहे हैं। कबीर दादू आदि सन्तों की तरह सन्नू मेवाती ने यहाँ के लोगों के बारे में बताया है कि ये लोग कभी भी अकर्मण्यता का वरण नहीं करते हैं। भिक्षाटन या माँगना इनके स्वभाव में नहीं है। संत लालदास ने भी भिक्षा वृत्ति को त्याज्य कहा है। लार्ड सन्नू ने कहा है–

मेव न जाणे माँगते, मेहनत करके खाय।
सन्नू मिले न काम तो भूखो ही सो जाय।।
नेता चंदो माँग ले, मुल्ला माँगे नाज।
मेव न जाणे माँगते, सन्नू आवे लाज।।
खुदा कुरान रसूल की,बात लगी माकूल।
मेव कौम न नू करो, सन्नू दीन कबूल।।

'मेव' कौम के लोग सदैव पेंचदार साफा बाँधते हैं तथा सफेद रंग के वस्त्र धारण करना इनके स्वभाव की प्रमुख विशेषता है। कवि कहता है–

पेंचदार फेंटो सदा, मेवन की पहचाण।
धोलो रंग पसन्द है, ना है सन्नू आण।।

मेवाती वाद्य यंत्रः–मेवात की लोक कला तथा काव्य के सरोकार यहाँ चिकारा, टामक, भपंग आदि वाद्ययंत्रों के रूप में व्यक्त हुए हैं जिनका उल्लेख सन्नू के दोहों में हुआ है–

अलगोझो अर चिकारो, अर टामक की घोर।
सन्नू बाजा मेव का, बजा सकै न और।।
अलगोझो अर चिकारो, टामक रण बाजो।
तीनू बाजा मेव का, ना सन्नू साझो।।

धींग धरा मेवातः–मेवात की भूमि वीरप्रसू रही है। बलबान, पराक्रमी, कर्त्तव्यपरायण तथा शत्रु के समक्ष लड़ने वाले वीरों–धीगों की धरा रही है मेवात। हसन खाँ जैसे योद्धाओं की भूमि है मेवात, जिसने राणा साँगा का साथ देकर बाबर से लोहा लिया। दिल्ली के कांधे पर ढाल की तरह है मेवात। राष्ट्रप्रेम–मातृभूमि प्रेम का उत्कृष्ट नमूना है हसन खाँ मेवाती। लार्ड सन्नू कहता है–

निपजै जोधा मरखणा, सौ बातन की बात।
दिल्ली काँधे ढाल ज्यूं, धींग धरा मेवात।।
मायड़ भूम पै मर मिटो, हुयो हमीद शहीद।
सन्नू वाकी मन गई, होली राखी ईद।।

मल्ल की हल्ल (कुश्ती की ख्याति):– अलवर मेवात में मल्ल (कुश्ती–दगंल) की चर्चा अहम् मायने रखती है। पहलवानी और कसरत, दंगल–अखाड़े के पर्याय बन गये है। पशु पालन तथा कृषि संस्कृति में घी, के खानपान की उपलब्धि मल्ल के रूप में अवतरित हुई। ब्रज–मेवात के गाँवों को भी कुश्ती के पहलवानों के नाम से जाना जाता है। छांगलकी कोजुम्मो, गूँगो, धुन्धी, कूबड़ो, सम्पत, कबीर आदि पहलवान नामचीन रहे हैं। छाता दोसरस का लल्लू (सन् 47 के बाद) धीवरी का चन्द्रभान, छपरा का मनफूल, लोहेसर का शौदान, सीसण का आसीन, रांता को भेंडों, बैंसी में टुटटी, जैसे पहलवानों से इनके गाँव सुर्खियों में रहे हैं। इन पहलवानों का मल्ल कौशल अनूठा रहा। लार्ड सन्नू ने चुन–चुन कर इन पहलवानों के कौशल को अपने दोहों में पिरोया है–

अलवर के महाराज को, हो सिरदारो मल्ल।
गाँव खोहरा की मची, सन्नू कोसन हल्ल।।
छांगलकी का मल्ल में, सन्नू अबीड़ी आँट।
दुगणा तिगणा मल्ल कू, जुम्मो देय पछाँट।।
गूंगो धुन्धी कूबडो, सम्पत और कबीर।
छाँगलकी में ये हुआ, सन्नू बणा नजीर।।
खुदा बकस मगरो हुआ, और कमल खाँ साथ।
जब दंगल में उतरता, सन्नू अजब ही बात।।
जुम्मो छाँगलकी हुयो, मल्ल बड़ो सरनाम।
रोशन कर दियो गाँव को, सन्नू भारी नाम।।

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा

लल्लू सन्नू मल्ल हो, छता दौसरस गाँव।
भग्गी सू पीछे हुयो, सौ सौ कोसन नाँव।।
चन्दर भान हा धीवरी, छपरा में मनफूल।
पहलवान दोनू हुआ, ये सन्नू मकबूल।।
झडमल रणमल मोरमल, ये हा अच्छा मल्ल।
सन्नू अपणा समै में, ही इनकी भी हल्ल।।
सीसण में आसीन हो, लोहेसर शौदान।
सन्नू अच्छा मल्ल का, पल में मारा मान।।
राता में भैंडो हुयो, बैसी में टुट्टी।
सन्नू तगडा मल्ल की, कर दे हा छुट्टी।।

काला पहाड़ः– मेवात में अरावली पर्वतमाला के काले रंग के पर्वत–पहाड़ हैं जिन्हें काला पहाड़ कहा जाता है। भौगोलिक दृष्टि से यहाँ नदियाँबहुत कम हैं तथा बहुसंख्यक आबादी पहाड़ों के इर्द–गिर्द बसी हुई है।प्रकारांतर से काला पहाड़ मेवाती संस्कृति का जीवंत प्रतीक बन गया है। भगवान दास मोरवाल ने 'काला पहाड़' नामक मेवाती पृष्ठभूमि पर एक आँचलिक उपन्यास भी लिखा है जिसकी आधुनिक साहित्यिक विमर्श में चर्चा रही है। भौगोलिक दृष्टि से यह पर्वत हरियाणा के मेवात का पर्याय कहा जा सकता है। काला पहाड़ मेवात के सुख–दुःख का साथी रहा है। सुख में इस पर्वत के झरने, पाँच पहाड़, धौक – पलाश के जंगल, झाड़, झंखाड, कांस– घास, मोर, कोयल और पपीहे की कूक, कुलांचे भरते हिरण जैसे जंगली जानवर, पशुधन चराते ग्वाल–बाल सहित इस पर्वत के सरोकार यहाँ की लोक–संस्कृति और लोक गीतों के केन्द्र में समाहित हैं। दुःख के समय यही पर्वत मेवात की सुरक्षा के रूप में खड़ा रहता है। विभाजन की त्रासदी पर मेवों ने इसे अपना मोर्चा बनाया था। लार्ड सन्नू ने काला पहाड़ को केन्द्र में रखकर सुन्दर मुक्तकों (दोहों) की रचना की है–

कालो पहाड़ सुहावणो, बीच सन्नू मेवात।
नाला अर झिरणा घणा, कुदरत की सौगात।।
कालो पहाड़ सुहावणो, इरद गिरद मेवात।
एक साथ सन्नू बणो, कुदरत की कहलात।।
कालो पहाड़ सुहावणों, पाँच पहाड़ है संग।
सब अडवल का साँक है, सन्नू वाका अंग।
कालो पहाड़ सुहावणों, भारी धोंक पलास।
सन्नू झाड़ झंकाड़ तो, कही घास अर कांस।।
काला पाहड़ की वाल में, कुहके सन्नू मोर।
हिरण भरे कुलाँचे अर, ग्वाल चरावें ढोर।।
कालो पाहड़ गवाह है, कितना देखा जंग।
तंग हुआ ना जंग सू, सन्नू लोग दबंग।।

मीरासीः– मेवात अपने लोकरंग तथा लोक रस की छटा के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ के लोक काव्य तथा लोकगीतों की जुम्बिश ने इसकी सांस्कृतिक गरिमा में चार चाँद लगाये हैं। लोकगीत लोक हृदय की जीवित और जीवंत उपज है परन्तु इस उपज को सुव्यवस्थित, रुचिप्राण तथा चिरंजीवी बनाने में यहाँ की मीरासी जाति का महत्वपूर्ण स्थानहै। बात के सांस्कृतिक–ऐतिहासिक वैभव के साथ–साथ यहाँ के सामाजिक ताने–बाने की आभा मीरासियों द्वारा गाई बजाई जाती रही है। इनकी काव्य प्रतिभा चारण भाटों से अधिक खरी एवं चमकदार है।**डॉ. देशराज वर्मा ने लिखा है–**'मेव जाति के गौरव–मूल्यों का जिक्र मेवाती साहित्य (काव्य) में दर्ज है। यद्यपि मेवाती लोक–काव्य का सुव्यवस्थित लिप्यांकन नहीं हो पाया है फिर भी लोकरंग और यहाँ के गीत, दूहा. बात, ख्याल, रतवाई आदि के स्वरों में मुखर होता है। ये गीत, दूहे यहाँ के जन–जन के कंठ में विराजमान रहे हैं। कुछ मीरासी जैसी जाति के लोगों द्वारा इन्हें पेशेवर ढंग से गाया बजाया जातारहा है।"[8]मौजपुर के ज़हूर खाँ मेवाती का नाम (भपंग वादक के रूप में भी) स्मरणीय है। मीरासी बिना लाग–लपेट तथा बिना डर तथा स्वार्थ के अपनी बात कहते रहे हैं। लार्ड सन्नू ने भी इन्हें सम्मानपूर्वक उद्धृत किया है–

सन्नू निधडक जात है, चारण और मीरासी।
सच्च कहा बिन ना रहे, भले लगे फांसी।।
सन्नू ठाकर मेव के, चारण ओ मिरासी।
बिडद बखाणे सच कहे, भले लगे फाँसी।।

स्वाधीनता संग्राम तथा प्रजामण्डल आंदोलन के दौरान भी मेवात केन्द्र में रहा। बाबू शोभाराम मत्स्य संघ के प्रधानमंत्री रहे। बाबू शोभाराम के नाम पर अलवर के कला कॉलेज का नामकरण हुआ है। भोलाराम, शोभाराम, छोटूसिंह तया घासीराम जैसे राजनेताओं को लेकर भी सन्नू खाँ दोहे लिखते हैं। इन राजनेताओं के बाहरी व्यक्तित्व को भी सन्नू ने इस तरह वाणी दी है–

हजरत सू भोलो कहे, सातिर शोभाराम।
छोटू सिंह मोटो घणों, लम्बो घासीराम।।

विभाजन की त्रासदीः–भारत–पाक विभाजन की त्रासदी को मेव– और मेवात ने बड़े दर्द और बेचौनी के साथ झेला है। अपनों के बिछुड़ने की पीड़ा, धार्मिक उन्माद तथा फिर से स्थापित होकर बसने का संघर्ष किसी से अपरिचित नहीं है। लार्ड सन्नू ने तत्कालीन परिस्थितियों और व्यक्तियों को बड़ी शिद्दत के साथ व्यक्त किया है।

या सन सैतालीस में, देश हुयो आजाद।
जहर धरम को घुल गयो, मेव हुआ बरबाद।।
या सन सैंतालिस की, अमर रहेंगी बात।
देश हुयो आजाद पर, उजड़ गई मेवात।।
अदल बदल मानस हुआ, बदली आबादी।
ऐसी भारत देश में, आई आजादी।।
बच्चू सिंह ने कई बार, बहुत चढ़ाई धाड़।
मेवन को हो मोरचो, कालो किलो पहाड़।।
अशरफ और शफात ने, माँगो मेवस्तान।
फिर भग्गी में बिखरगा, इत बित कू विद्वान।।
मादल के धुंधल हुयो, वाके हुयो शफात।
वा भग्गी का दौर में, जाण गई मेवात।।
गाँधी की आँधी चली, हिन्द हुयो आजाद।
जहर धरम को फैलगो, देश हुयो बरबाद।।
उजड़ा खेड़ा फिर बसा, लोग हुआ खुशहाल।
अपणा चूल्हा मिल गया, होगा लोग बहाल।।
फिर कुछ होगी शान्ति, सुधरगई कुछ बात।
गाँधी और आसीन ने, बसा दई मेवात।।
सतम भाई विनोबा, हई अर इब्राहीम।
फिर बसाव की घणै दिन, करता रहा मुहीम।।

शिक्षा की शक्ति जीवन के उत्थान की भक्ति है। शिक्षा सिंहनी का दूध है जो गुर्राना सिखाती है। शिक्षा पशुत्व से मानवता की ओर प्रयाण है। तभी तो मेवात में भी तालीम की मुहिम को सन्नू महत्वपूर्ण मानता है–

बिना पूँछ को ढोर है, माणस बिन तालीम।
नू सन्नू मेवात में, चलरी नई मुहीम।।

इस तरह सन्नू मेवाती के दोहों में मेवात का समग्र व्यक्तित्व साकार हो उठा है। शास्त्रीय दृष्टि से भलें ही दोहों में मात्राओं का पूर्ण निर्वहन न हुआ हो परन्तु विषय की प्रेषणीयता एवं साधारणीकरण बेजोड़ बन पड़े हैं।

संदर्भ सूची–

1 मेवात का इतिहास और संस्कृति–सं.मुषी खां बालौत डॉ. पी.एस. सहारिया, पृ. 35 (डॉ. सहारिया के आलेख से आभार : 2015 : में.सा.अ.स. अलवर)
2 सन्नू मेवाती का दोहा संसार– सं.डॉ.देषराज वर्मा, डॉ. सहारिया–भूमिकाः (मे.सा.अ.अलवर 2018)
3 चिराग ए मेवात (विषेषांक–3), जून 2006, पृ. 49
4 वही, पृ. 48
5 चिराग ए मेवात, अंक–1, 1999–सं.– मुंषी खां बालौत
6 मेवात का इतिहास और संस्कृति–सं.–मुषी खां बालौत डॉ.पी.एस. सहारिया, पृ. 132 (मेवाती साहित्य अकादमी, अलवर : 2015)
7 मेवात का इतिहास और संस्कृति–सं.–मुषी खां बालौत सहारिया, पृ. 06 (मेवाती साहित्य अकादमी, अलवर : 2015)
8 मेवात का इतिहास और संस्कृति–सं.–मुषी खां बालौत डॉ.पी.एस. सहारिया, पृ. 132 (मेवाती साहित्य अकादमी, अलवर : 2015)

*Corresponding Author: डॉ.देशराज वर्मा